22/12/2023 Morning

This question paper contains 2 printed pages.

Sl. No. of Q.P. 526

Maitreyi College, Chanakya Puri, New Delhi-110021 LIBRARY

Unique Paper Code : 2152102301

Name of the Paper : Classical Sanskrit Literature (DSC-7)

Name of the Course : B.A (Hon.) Sanskrit

Semester : III

Duration: 3 Hours

Maximum Marks: 90

(Write your Roll no. on the top immediately on receipt of this question paper.)

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

Note: Unless otherwise required in a question answers should be written *either* in **Sanskrit** *or* in **Hindi** *or* in **English**, but the same medium should be used throughout the paper.

टिप्पणी: अन्यथा आवश्यक न होने पर इस प्रश्नपत्र का उत्तर संस्कृत या हिन्दी या अंग्रेजी किसी एक भाषा में दीजिये परन्तु सभी प्रश्नों का माध्यम एक ही होना चाहिए।

Answer all questions. सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. खण्ड 'अ' तथा खण्ड 'ब' प्रत्येक में से किन्हीं **तीन-तीन** पद्यों का अनुवाद एवं विस्तृत व्याख्या कीजिए।
Translate and explain in details any **three** verses from part A and part B each. **8x6=48**

भाग-अ [Part-A]

(क) कौलूतश्चित्रवर्मा मलयनरपतिःसिंहनादो नृसिंहः
काश्मीरः पुष्कराक्षः क्षतरिपुमहिमा सैन्धवः सिन्धुषेणः।
मेघाक्षः पञ्चमोऽस्मिन् पृथुतुरगबलः पारसीकाधिराजो
नामन्येषां लिखामि ध्रुवमहमधुना चित्रगुप्तः प्रमार्ष्टु।।

(ख) पृथिव्यां किं दग्धाः प्रथितकुलजा भूमिपतयः
पतिं पापे मौर्यं यदसि कुलहीनंवृतवती।
प्रकृत्या वा काशप्रभवकुसुमप्रान्तचपला
पुरन्ध्रीणां प्रज्ञा पुरुषगुणविज्ञानविमुखी।।

(ग) प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः
प्रारभ्य विघ्नविहता विरमन्ति मध्याः।
विघ्नैःपुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः
प्रारब्धमुत्तमगुणास्त्वमिवोद्वहन्ति।।

(घ) परार्थानुष्ठाने रहयति नृपं स्वार्थपरता
परित्यक्तस्वार्थो नियतमयथार्थः क्षितिपतिः।
परार्थश्चेत् स्वार्थादभिमततरो हन्त परवान्
परायत्तः प्रीतेः कथमिव रसं वेत्ति पुरुषः ।।

भाग-ब [Part-B]

(क) नीवाराः शुकगर्भ कोटरमुखभ्रस्टातरूणामधः
प्रस्निग्धाः क्वचिदिंगुदीफलभिदः सुच्यन्त एवोपलाः।
विश्वासोपगमादभिन्नगतयः शब्दं सहन्ते मृगा-
स्तोयाधारपथाश्च वल्कलशिखानिष्यन्दरेखाङ्किताः।।

munotes.in

(ख)सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यं
मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति।
इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी
किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनां।।

(ग) यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया
कण्ठः स्तम्भितवाष्पवृत्तिकलुषश्चिन्ताजडं दर्शनम्।
वैक्लव्यं मम तावदीदृशमिदं स्नेहादरण्यौकसः
पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनयाविश्लेषदुःखैर्नवैः ।।

(घ) पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्माष्वपीतेषु या
नादत्ते प्रिय मण्डनाऽपि भवतां स्नेहेन या पल्लवम्।
आद्ये वः कुसुमप्रसूतिसमये यस्या भवत्युत्सवः
सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्।।

2. उपमा कालिदासस्य की समीक्षा कीजिए। 9
Critically examine उपमा कालिदासस्य

अथवा /or

अभिज्ञानशाकुन्तल के चतुर्थ अंक का महत्त्व प्रतिपादित कीजिए।
Describe the importance of 4th Act of *Abhigyanshakuntal.*

3. संस्कृत नाटक के उद्भव और विकास पर निबन्ध लिखिए। 9
Write an essay on the origin and development of Sanskrit Drama.

अथवा /or

मुद्राराक्षस के द्वितीय अङ्क का कथासार अपने शब्दों में लिखिए।
Write the summary of 2nd Act of *Mudrarakshas* in your own words.

4. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** की विवेचना कीजिए: 6x2=12
Discuss any **two** of the following:
(i) अत्यादरः शङ्कनीयः
(ii) काव्येषु नाटकं रम्यम्
(iii) भास के नाटक
(iv) भवभूति
(v) भट्टनारायण

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए: 4x3=12
Write short notes on any **three** of the following:
(i) नान्दी
(ii) अंकास्य
(iii) प्रवेशक
(iv) स्वगत
(v)भरतवाक्य

(500)

nunotes.in